

अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

कृषि ज्ञान सुधा

जुलाई 2025 अंक



मिर्च की वैज्ञानिक खेती

कुन्ती बंजारे, साक्षी बजाज, हेमलता निराला एवं नारायण लाल¹
रेवन्द्र सिंह वर्मा कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, बेमतरा (छ.ग.)
¹भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान ए भोपाल (मध्य प्रदेश)

सारांश

मिर्च, सोलेनेसी कुल की एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसल है, जिसका उपयोग हरी और सूखी अवस्था में सब्जी, मसाले, अचार, सॉस तथा औद्योगिक उत्पादों जैसे कैप्सेसिन और ओलीयोरेजिन निर्माण में होता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा मिर्च उत्पादक, उपभोक्ता और निर्यातक देश है, जहां लगभग 8 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में इसकी खेती होती है।

सफल उत्पादन के लिए उन्नत किस्मों (मुक्त परागित व संकर), संतुलित पोषण, उचित भूमि (pH 6–7.5), पौधशाला प्रबंधन, समय पर रोपण (मैदानी क्षेत्रों में जुलाई-सितंबर), एवं सही दूरी (60–75 से.मी. पंक्ति से पंक्ति, 45–50 से.मी. पौध से पौध) का पालन आवश्यक है। रोग एवं कीट प्रबंधन के लिए बीज उपचार, पौधशाला सौर्योकरण, मच्छरदानी का प्रयोग, संतुलित सिंचाई तथा रसायनों का सावधानीपूर्वक उपयोग जरूरी है।

मुख्य कीट-थ्रिप्स और पीली माइट-पत्तियों को नुकसान पहुंचाते हैं, जबकि पत्ती मोड़ विषाणु, फ्यूजेरियम विल्ट, शीर्षभरण व फल सङ्ग ग्रन्थि रोग हैं। इनके नियंत्रण के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) और फसल चक्र अपनाना प्रभावी है। नियमित निकाई-गुड़ाई, खरपतवार नियंत्रण, पुष्पन व फलन अवस्था में सिंचाई, तथा समय पर तुड़ाई (हरी के लिए 20–30 दिन बाद, सूखी के लिए पौधे पर पकने तक) से अधिक उपज प्राप्त होती है।

लेख स्पष्ट करता है कि वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग, रोग-कीट नियंत्रण, और उन्नत किस्मों के चयन से मिर्च की पैदावार व गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है, जिससे किसानों की आय में बढ़ोतरी संभव है।

व्यावसायिक फसलों में मिर्च का एक महत्वपूर्ण स्थान है। सोलेनसी कुल के इस फसल को दुनिया भर में हरे फल उत्पादन तथा मसालों के रूप में बहुतायत मात्रा में प्रयोग किया जाता है। मिर्च की खेती की शुरुआत मध्य दक्षिण अमेरिका से हुई थी, और अब पूरे विष्व में इसकी खेती की जाती है। प्रायः सभी लोग कम अथवा अधिक मात्रा में मिर्च का प्रयोग किसी न किसी रूप में करते हैं। मिर्च भोजन में विषेषकर सब्जियों को चटपटा बना देता है। जिससे उनकी उपयोगिता बढ़ जाती है। तीखी हरी मिर्च का प्रयोग सलाद, सब्जी, केचप निर्माण में तथा सूखे लाल मिर्च का प्रयोग मसाले अचार तथा प्राकृतिक रंग (ओलीयोरेजिन) उत्पादन में किया जाता है। मिर्च में तीखापन कैप्सेसिन नामक प्रमुख अवयव के कारण होता है। मिर्च से प्राप्त ओलीयोरेजिन व कैप्सेसिन का उपयोग विभिन्न उद्योगों जैसे दवा उद्योग, आहार, सौन्दर्य प्रसाधन आदि में किया जाता है। इसके अलावा पोषक तत्वों में विटामिन सी हरे तथा परिपक्व लाल फल में बहुतायत में पाया जाता है। सम्पूर्ण विष्व में भारत मिर्च का सर्वाधिक उत्पादन, खपत और निर्यात करने वाला देश है। भारत वर्ष में मिर्च की खेती लगभग 8 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है। जिससे लगभग 13 लाख टन सूखे मिर्च का उत्पादन होता है। मिर्च की खेती से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर जानकारियां निम्नलिखित हैं।

उन्नत किस्में

मिर्च की सफल खेती कर अधिक उपज प्राप्त करने के लिये उचित किस्मों का चुनाव अति महत्वपूर्ण है। व्यावसायिक स्तर पर इसकी खेती हरे व लाल मिर्च के लिये की जाती है। सामान्यतया संकर किस्मों का उपज ज्यादा होता है। परन्तु इसके लिये प्रतिवर्ष संकरण से प्राप्त बीजों का ही प्रयोग करना होता है। मुक्त परागित बीजों के किस्मों को

उत्पादक अपने खेत में उगाये मिर्च की फसल के स्वपरागण से प्राप्त कर सकते हैं। मिर्च की लोकप्रिय उन्नत किस्में निम्नवत हैं।

मुक्त परागित किस्में

काशी अनमोल: इस किस्म के पौधे सीमित बढ़वार वाले एवं छातानुमा फल ठोस, सीधे वजनी एवं तीखे होते हैं। पौध रोपण के 40-50 दिन बाद प्रथम तुड़ाई की जा सकती है। हरे फल उत्पादन हेतु यह एक उत्तम किस्म है। यह किस्म अगेती फसल के लिये उपयुक्त है। तथा इसकी फलों की उपज लगभग 200 क्विटल./हे. होती है।

काशी गौरव: इस किस्म के पौधे झाड़ीनुमा गहरे हरे, पत्तियों वाले तथा थ्रिप्स एवं पीली चींटी के प्रति सहनशील तथा फल सड़न रोग रोधी होते हैं। इसके फल गहरे हरे रंग के लम्बे होते हैं। तथा पौध रोपण के लगभग 60-70 दिनों बाद प्रथम तुड़ाई की जा सकती है। इस किस्म के हरे फलों की औसत उपज 350 क्विटल./हे. होती है।

पूसा ज्वाला: इसके पौधे हल्के हरे रंग के तथा झाड़ीनुमा होते हैं। फल पतले 7-10 से.मी. लम्बे तथा नुकीले होते हैं। यह हरे एवं सूखे फल हेतु उत्तम किस्म है। चरपराहट अधिक होने एवं प्राप्त होने के कारण यह निर्यात हेतु एक उत्तम किस्म है। इसके फलों की औसत उपज 90-100 क्विटल./हे. होती है।

पूसा सदाबहार: इसके पौधे लम्बे ऊपर की तरफ एवं गुच्छों में फलत पत्तियाँ चौड़ी तथा फल लम्बे होते हैं। यह पत्ती मोड़ विषाणु रोग फल सड़न थ्रिप्स एवं माइट्स से अवरोधी है। हरे फल का उत्पादन लगभग 80-90 क्विटल./हे. होता है।

पंत सी-1: यह किस्म पत्ती मोड़ के विषाणु रोग फल सड़न के प्रति सहनशील होती है। फल छोटे हल्के हरे 5-6 से.मी. लम्बे तथा ऊपर की तरफ लगते हैं। इसके हरे फलों के औसतन ऊपर 80-90 क्विटल./हे. होती है।

पंजाब लाल: यह किस्म पत्ती मोड़ विषाणु रोग टमाटर मोजैक विषाणु तथा खीरा मोजैक विषाणु से अवरोधी तथा फल सड़न थ्रिप्स एवं माइट्स से सहनशील होते हैं। इसके हरे फलों की औसतन उपज 100-110 क्विटल./हे. होती है। अन्य मुक्त परागित किस्में जैसे कि भास्कर, जवाहर मिर्च-218, अर्का लोहित, आजाद मिर्च-1, गुजरात मिर्च 101, भाग्यलक्ष्मी अत्यादि भी काफी प्रचलित हैं।

संकर किस्में

काशी सुर्ख: यह एक नी बन्ध्य आधारित संकर किस्म है जिसके फल सूखे तथा हरे फलोत्पादन हेतु उत्तम होते हैं। पौधे लम्बे, झाड़ीनुमा, ओजस्वी तथा फल 10-11 से.मी. लम्बे एवं हल्के हरे रंग के होते हैं। पौध रोपण के 50-55 दिनों बाद हरे फल तुड़ाई के योग्य हो जाते हैं। इसके हरे फलों की औसतन उपज 200-250 क्विटल./हे. होती है।

काशी अगेती: पौधे लम्बे एवं ओजस्वी होते हैं, फल सीधे लम्बे तथा हरे रंग के होते हैं। प्रथम तुड़ाई पौध रोपण के मात्र 40-45 दिनों बाद ली जा सकती है। तथा यह उत्तम भण्डारण क्षमता वाली होती है। हरे फल का उत्पादन लगभग 200 क्विटल./हे. होती है।

काशी तेज: यह एक नर बन्ध्य आधारित अगेती संकर किस्म है। फल 10-12 से.मी. लम्बे, हल्के हरे तथा ताजा व सूखे फल के लिये उत्तम किस्म है। इस किस्म से लगभग 150-200 क्विटल/हे. हरे मिर्च की उपज प्राप्त होती है।

अर्का मेघना: यह एक नर बन्ध्य आधारित संकर किस्म है। जिसके पौधे लम्बे, ओजस्वी एवं गहरे रंग के होते हैं। फल 8-10 से.मी. लम्बे, मोटे तथा वजनी होते हैं। पौध रोपण के 50-55 दिनों बाद प्रथम तुड़ाई योग्य हो जाते हैं। हरे एवं लाल दोनों फल उत्पाद हेतु उत्तम किस्म है। हरे फल का उत्पादन लगभग 150-200 क्विटल/हे. होती है।

अर्का हरिता: इस नर बंध्य आधारित संकर किस्म के फल हरे एवं लाल दोनों के लिये उपयुक्त होते हैं। फल पतले लम्बे, हरे रंग के तथा चरपरे होते हैं। पौध रोपण के 55 दिनों के बाद हरे फलों की प्रथम तुड़ाई की जा सकती है। हरे फल का उत्पादन लगभग 150-200 किवटल/हे. होती है।

अन्य संकर किस्में जैसे तेजस्विनी, एन.एस.-1101, दिव्य ज्योति, सोल्जर इत्यादि भी काफी प्रचलित हैं।

भूमि की तैयारी

मिर्च की सफल खेती हेतु अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट या दोमट भूमि का चुनाव करना चाहिये। ऐसी मिट्टी जिसका पी.एच. मान 6-7.5 के बीच हो, खेती के लिये उपयुक्त होती है। खेत की दो-तीन जुताई करके पाटा लगा देते हैं। ताकि खेत की मिट्टी भूरभुरी हो जाय।

बुआई एवं रोपण का समय

मैदानी क्षेत्रों में पौधशाला में बीज की बुआई का उपयुक्त समय जून-अगस्त तथा रोपण का उचित समय जुलाई-सितम्बर है। जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में बीज की बुआई मार्च-अप्रैल तथा अप्रैल-मई में रोपण कर लेते हैं।

बीज की मात्रा

एक हेक्टेयर खेत में मुक्त परागित किस्मों के 300-400 ग्राम बीज तथा संकर किस्म के 250 से 300 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

सौर्योकरण

अप्रैल-मई के महीनों में जब धूप की गर्मी ज्यादा हो, पौधशाला की हल्की सिंचाई करके सफेद 200 गेज की पालिथीन सेनम क्यारी को 5-6 सप्ताह के लिये इस तरह ढक देते हैं कि क्यारियों के अंदर हवा का आदान-प्रदान बिल्कुल न हो। इस प्रक्रिया द्वारा पौधशाला में खरपतवार के बीज, मिट्टी के अंदर हानिकारक कीट, कवक एवं जीवाणु काफी हद तक नष्ट हो जाते हैं। बीज बुवाई से पहले पालीथीन को हटाकर मिट्टी को अच्छी प्रकार से भूरभुरी बना लेना चाहिये।

मिट्टी एवं बीज शोधन

बहुत से हानिकारक कवक एवं जीवाणु बीज को उगाने के समय अथवा उगाने के बाद नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इसके लिये जरूरी है कि बुवाई से पहले मिट्टी तथा बीज दोनों को शोधित करके ही बोया जाय। बीज को कैप्टान अथवा बाविस्टिन (कार्बन्डाजिम) की 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से तथा गाउचों की 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. की दर से उपचारित कर लेना चाहिये। उपचारित बीज द्वारा तैयार पोधें स्वस्थ एवं रोगमुक्त होते हैं। पौध शाला की मिट्टी को भूरभुरी बनाकर 1.5 से 2 ग्राम/लीटर कैप्टान अथवा कार्बन्डाजिम का घोल बनाकर क्यारी को पूर्णतया भिगों देना चाहिये। जिससे मृदा में उपस्थित हानिकारक कवक, जीवाणु इत्यादि नष्ट हो जाते हैं। तत्पश्चात् दूसरे दिन बुवाई का कार्य शुरू करते हैं। पौधशाला की मिट्टी को फार्मेलिन के घोल से भी उपचारित किया जा सकता है। इसके लिये किसी बर्तन में 1.5-2.0 प्रतिषत फार्मेलिन का घोल बनाकर 4-5 लीटर प्रति वर्ग मीटर की दर से मिट्टी को भिगों दें तदुपरान्त इसे 200 गेज के पॉलिथीन से ढक दें। 15 दिनों बाद पॉलिथीन हटाकर बीज बुवाई की तैयारी करनी चाहिये।

पौधशाला में बीज की बुवाई

पौधशाला की मिट्टी में गोबर या कम्पोस्ट की खाद डालकर अच्छी प्रकार मिला दें। अच्छी पौध तैयार करने के लिये प्रति वर्ग मीटर की दर से 10 ग्राम डाई अमोनियम फास्फेट और 1 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाना चाहिये।

बीजों को 20-25 से.मी. ऊँची उठी हुई क्यारियों में डालना उचित होता है। क्यारियों की चौड़ाई 1 मीटर तथा लंबाई आवश्यकतानुसार रखते हैं। जिससे सस्य क्रियाओं में आसानी होती है। पौध गलन (डैपिंग ऑफ) बीमारी का प्रकोप को कम करने हेतु सघन बुआई नहीं करनी चाहिये। पंक्ति में बुआई के लिये, एक पंक्ति से दूसरे पंक्ति की दूरी 5-6 से.मी. रखें व इन्हीं पंक्तियों में बीज की बुआई 1 से.मी. की अंतराल पर करें। बीज बुआई के बाद क्यारियों को सड़ी हुई गोबर की खाद या पत्ती की खाद (कम्पोस्ट खाद) से ढक दें जिससे ऊपर की मिट्टी बैठने न पाये। तत्पश्चात् फुहारे से हल्की सिंचाई करें। आवश्यकतानुसार फुहारे से सिंचाई करते रहें, एक सप्ताह के अंतराल पर गीज शैर्या में पौधों को डायथेन एम.-45 या कार्बन्डाजिम के 0.2 प्रतिष्ठत घोल (2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) से उपचारित करें। मिर्च के बीज पौधाशाला में बुआई के लगभग 30 दिनों बाद पौध रोपाई के लिये तैयार हो जाते हैं।

रोपण एवं दूरी

अन्य सब्जियों की भौति मिर्च के पौधों का रोपण भी शाम के समय करना चाहिये। रोपण के बाद पौधों को हजारे की सहायता से दो-तीन दिनों तक सुबह-शाम सिंचाई करें अथवा मेड पर रोपाई के बाद नाली में सिंचाई करने से बार-बार पानी देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। मिर्च की रोपाई के लिये पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60-75 से.मी. व पौध से पौध की दूरी 45-50 से.मी. रखना चाहिये।

सिंचाई

पौध रोपण के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करना अत्यन्त आवश्यक है। उसके बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करना चाहिये। मिर्च में पानी की मात्रा मिट्टी की किस्म, क्षेत्र में होने वाली वर्षा की मात्रा और उगाई जाने वाली किस्म पर निर्भर करती है। यदि वर्षा कम हो रही हो तो 10-15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करना चाहिये। गर्मी के महीनों में सिंचाई एक सप्ताह के अंतराल पर करें, पुष्पन व फलियाँ बनते समय सिंचाई करना अति आवश्यक होता है। ध्यान दें कि वर्षा का पानी खेत में रुकने न दें अन्यथा पौधे रोग से खत्म हो जाते हैं।

अन्तः सस्य क्रियायं

मिर्च के खेत में अनेकों प्रकार के खरपतवार उगते हैं अतः समय-समय पर निकाई-गुड़ाई करते रहना चाहिये। स्टाम्प 3.3 लीटर 1000लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर रोपण से पूर्व खेत में प्रयोग करने से खरपतवार नहीं उगते हैं व अच्छी उपज प्राप्त होती है। भूमि में हवा का आवागमन सुचारू रूप से होता रहे इसके लिये सिंचाई के बाद हल्की गुड़ाई कर पौधों की जड़ों के पास मिट्टी चढ़ा दें। सिंचाई के दौरान यह ध्यान रखें कि पानी पौधों के मुख्य तने तक न पहुँचे और मिट्टी बैठने न पावें।

तुड़ाई

हरी मिर्च के लिये तुड़ाई फल लगने के 20-30 दिनों बाद कर सकते हैं। परन्तु यदि सूखी लाल मिर्च के लिये तुड़ाई करनी हो तो एक या दो बार हरी मिर्च की तुड़ाई करके मिर्च पौध पर ही पकने के लिये छोड़ दी जाती है। तुड़ाई करने से फूल बहुलता से आते हैं और पैदावार भी ज्यादा मिलती है। एक तुड़ाई से दुसरे तुड़ाई का अंतराल 15-20 दिनों का हो सकता है। साधारणतः तुड़ाई का अंतराल किस्म तथा भूमि की उर्वरा पर निर्भर करता है।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

थिप्स: इस कीट के षिषु तथा वयस्क दोनों पत्तियों से रस चूसकर नुकसान पहुँचाते हैं। वयस्क कीट की पंख कटी-फटी होती है। प्रौढ़ ऐकीट 1 मिमी से कम लम्बा होता है। यह कोमल, हल्के पीले भूरे रंग का होता है। एक मादा 50-60 अण्डे

देती है। इसके प्रकोप से पत्तियाँ ऊपर की ओर मुड़कर सूख जाती है। जिसका प्रतिकूल असर फसल की पैदावार पर होता है। पत्तियों का ऊपर की तरफ मुड़ जाना इसका मुख्य पहचान है।

नियंत्रण: मिर्च के बीज को इमिडाइक्लोप्रिड 70 डब्ल्यू. एस. का 5-10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज से उपचारित कर पौधाशाला में बुआई करें। पौधाशाला में नर्सरी को 25-30 दिनों तक थ्रिप्स से बचाने के न्यूयालान से बने जाली (200 मेस) प्रयोग करें। पर्णीय छिड़काव के लिये इनमें से कोई भी कीटनाषक जैसे डाइमेथोएट 30 ईसी. 1.5 मिली./ली. पानी इमामेकिटन बैंजोएट 5 एस.जी. 0.4 ग्राम/ली. पानी या फिप्रेनिल 5 एस.सी 2 मिली./ली. पानी या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5 ईसी. 0.6 मिली./ली. पानी या इमिडाइक्लोप्रिड 17.8 प्रतिष्ठत एस.एल. 0.5 मिली/ली. पानी की दर से 10-15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। इन दवा का प्रयोग फूल लगने के लगभग 10 दिन पहले बंद कर देना चाहिये। कभी भी एक ही रसायन को दो बार छिड़काव के पश्चात् दोहराएं न या बार-बार प्रयोग न करें।

पीली माइट: यह पीले रंग की छोटी चींटी है। इसकी पीठ पर सफेद धारियाँ होती हैं। यह आकार में इतनी छोटी होती है जो आसानी से दिख्खई नहीं देती। इसका प्रकोप होने पर पत्तियाँ नीचे की तरफ मुड़ जाती हैं। तथा देखने में सिकुड़ी लगती है। उत्पादन प्रभावित होता है। इस कीट के षिषु तथा प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुँचाते हैं। पौधों की बढ़वार भी प्रभावित होती है।

नियंत्रण: डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मिली./ली. पानी या इमामेकिटन बैंजोएट 5 एसजी. 0.4 ग्राम/ली. पानी या इथियान 5 ई.सी. 3-4 मिली. पानी मिली/ली. पानी की दर से 10-15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। कभी भी एक ही रसायन को दो बार छिड़काव के पश्चात् दोहराएं न या बार बार प्रयोग न करें।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

पत्ती मोड़ विषाणु रोग (मुर्चा अथवा लीफ कर्ल): इस रोग में पौधों की पत्तियाँ अनियमित ढंग से मुड़ जाती हैं तथा पौधों की बढ़वार रुक जाती है। फल छोटे व भद्रे हो जाते हैं तथा पौधों की पत्तियाँ हल्का पीलापन लिये हुये ऊपर नीचे मुड़ जाती हैं। अगर बीमारी पौधों की प्राथमिक अवस्था में लग जाए तो पौधों की बढ़वार तथा फल उत्पादन पूरी तरह रुक जाता है।

नियंत्रण: चूंकि यह रोग विषाणुवाहक कीट सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है अतः नर्सरी की अवस्था से ही कीटनाषक 4-6 दिनों के अंतराल पर छिड़काव इस रोग से मुक्ति प्रदान करता है। नर्सरी को मच्छरदानी से ढंककर उगाना चाहिये। रोगी पौधों को उखाइकर जला देना चाहिये अथवा मिट्टी के नीचे दबा देना चाहिये जिससे रोग का प्रसार रुक जाए। पौध रोपण के समय पौधों की जड़ों को इमिडाइक्लोप्रिड की 0.3 मिली/ली. की दर से पानी में घोल बनाकर 2 घण्टे तक अवध्य उपचारित करना चाहिये। नर्सरी में एक सप्ताह के अन्तराल पर कीटनाषक का छिड़काव करते रहना चाहिये।

फ्यूजेरियम विल्ट (उकठा): इस रोग में पौधों की पत्तियाँ पीली होकर गिर जाती हैं। तने का ऊपरी भाग पीला होकर झुक जाता है तथा अन्त में पूरा पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण: एक ही कुल के सब्जियों जैसे कि टमाटर या बैंगन के बाद पुनः उसी खेत में मिर्च न उगायें। बीज को कार्बन्डाजिम से 2.5 ग्राम/किग्रा. की दर से उपचारित करके ही बुआई करनी चाहिये। टेबुकोनाजोल 1 ग्रा./ली. की दर से छिड़काव करना चाहिये। खड़ी फसल पर कार्बन्डाजिम अथवा बेनलेट का 0.2 प्रतिष्ठत घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अंतराल पर करने से रोग का फैनाव रुक जाता है।

शीर्षभरण रोग (डाइबैक) एवं फल सड़न: इस रोग में पौधों का ऊपरी भाग सूखना प्रारम्भ होता है और नीचे तक सूखता जाता है। प्रारम्भिक अवस्था में टहनियाँ गीली होती हैं और उसपर रोयेंदार कवक दिखाई देती है। रोग ग्रसित पौधों के फल सड़ने लगते हैं। लाल फलों पर इस रोग का प्रकोप अधिक होता है।

नियंत्रण: इससे बचाव के लिये कार्बन्डाजिम 2.5 ग्राम दवा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बोयें। क्षतिग्रस्त टहनी को सुबह के समय कुछ नीचे से काटकर इकट्ठा कर लें एवं जला दें। डाईफेनोकोनाजोल 1 ग्रा./ली. की दर से या क्लोरोथैलोनिल 1.5 ग्रा./ली. की दर से या एजोक्सी स्ट्रोबिन 1 ग्रा./ली. की दर से या प्रोपिनेब 3.5 ग्रा./ली. की दर से या टेबुकोनाजोल 1 ग्रा./ली. की दर से पानी के साथ मिलाकर छिड़काव करें।



चित्र 1: मिर्च की वैज्ञानिक खेती

समाप्त

ISBN: 978-93-343-6466-8

कृषि ज्ञान सुधा